Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences

Volume 2, 2022, pp. 82–89

FOLKLORE IN KANNADA LITERATURE

Dr Sreedhara P. D.
Head, Department of Hindi
Kristu Jayanti College, Autonomous
sreedharpd@kristujayanti.com

कन्नड लोक साहित्य : एक परिचय

कनार्टक राज्य में 'लोक साहित्य' को 'जनपद साहित्य' के नाम से जाना जाता है। भाषा संस्कृति का प्रमुख अंग है। संस्कृति से संबन्धित सब कार्यों का मूल भाषा ही होता है। भाषा, समाज और संस्कृति ये तीनों का विशेष संबन्ध है। भाषा की अभिव्यक्ति कथा, गीत, कहावत, शायरी, चुटकुले आदि रूपों में प्रतिबिंबित होते हैं। इन्हीं दृश्य या श्रव्य काव्य रूपी अभिव्यक्ति के प्रकारों से अपनी संस्कृति द्वारा दर्शित होते हैं। इसी अभिव्यक्ति माध्यम भाषा के द्वारा ही सबका आचार-विचार, व्यवहार, पहचान, मन की भावनाएँ यहाँ तक कि चरित्र संस्कार भी परिलक्षित होते हैं। भाषा सिर्फ शब्दों का मायाजाल या संकर नहीं है। भाषा उसके उपयोग करनेवाले के जीवन के गति-विधयों के अनेक पहलुओं को दर्शाता है। भाषा में निहित सभी पद या शब्दों का अपना ही एक इतिहास रहता है। समाज के बीच संवहन माध्यम का इस भाषा संस्कृति के साथ सीधा संबन्ध है। मानव किया हुआ रूढीगत बातचीत, गाना-बजाना, नाचना-बजाना, जात्रा-जुलूस, महोत्सव-त्योहार, खेल-कूद, रीति-रिवाज, मान्यताएं, पूजा, विधि-विधान आचरण आदि जीवन के साथ अविनाभाव संबंध स्थापित कर चुके हैं।

इसी कारण 'जनपद साहित्य' को यानी 'लोक साहित्य' को विविध आयामों में अध्ययन करना बहुत आवश्यक है। अनेक विद्वान लोक साहित्य का ऐतिहासिक, भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक तथा धार्मिक नैतिक भाषा शास्त्रीय महत्व को जान चुके हैं। मानव का मन एक होने पर भी वातावरण, संस्कृति, अध्ययन अध्यापन, रोजगार और मिले अनुभव के कारण विभिन्न रूपों में प्रतिपादित होती है। कन्नड़ के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ शिवराम कारन्त कहते हैं कि - जनपद साहित्य

को अनेक मत धर्मों से प्रभावित, रीति–रिवाज भरोसे आदि मान्यताओं के कारण एक वर्ग की संस्कृति का निर्माण होता आया है इसके साथ अन्य प्रभाव सामान्यतः सब के ऊपर होता है।[1] लेकिन मात्र धर्म से जो प्रभाव होता है वह अत्यधिक होता है। मत और धर्म के कारण अनेक भावनाएं कल्पनाएं हमारे साहित्य में और कलाओं में दर्शित होते हैं। समाज के हर एक संप्रदाय का प्रस्तुति उसकी संस्कृति से ही होता है।

लोकगीत सामान्यतः विशिष्ट क्षेत्र के अनुसार प्रचलित होने पर भी निर्दिष्ट जाति या मत से गाए जाने वाले गीतों से लिप्त होते हैं। उदाहरण कन्नड़ लोक साहित्य में 'अहिर' जाति के लोग जिस प्रकार 'बिरहा गीत' जिस प्रकार गाते हैं, उस प्रकार अन्य कोई भी जाति मत या पंथ संप्रदाय के लोग गा नहीं सकते। राजस्थान के हरिजन मत में 'पपरा' नामक लोकगीत गाने की परंपरा है।[2] जनपद साहित्य या लोक साहित्य को धार्मिक महत्व के बिना नहीं देख सकते। धर्म सामान्य मानवीय का अत्यंत महत्वपूर्ण विभाग है। इसी कारण लोक साहित्य में लोगों की धार्मिक भावनाएं अत्यंत विविधता पूर्ण ढंग से चित्रित हुए हैं। सामान्य मनुष्य समाज में पारिवारिक वैभव समृद्धि किस प्रकार विनाश के कारण हो सकता है, इसको अनुभव से देख सकते हैं। इसी कारण लोकगीतों में संसार की अनित्यता, मानव जीवन की क्षणभंगुरता और भाईचार और मित्रता को विभिन्न प्रकारों में उल्लेख किया गया है। धार्मिक व्रत-जप-तप आदि कथाओं में धर्म के विचित्र रहस्य छिपे हुए रहते हैं। ग्रामीण या देहाती लोग अपनी अशिक्षा के कारण धर्म तत्वों को सामान्यतः पहचान नहीं सकते। उनके लिए लोकगीत, कहावत, कथाएं एवं अन्य सामान्य बोली से संबंधित माध्यमों द्वारा समझाया जा सकता है। समाज में शास्त्रीय अध्ययन अध्यापन से अधिक महत्व इन लोकगीतों का हैं। इसी कारण हमें उस प्रदेश के लोक साहित्य के अध्ययन करने से तत्काल के धार्मिक जीवन का ढांचा प्राप्त होता है।

विभिन्न मत या संप्रदायों से संबंधित लोक साहित्य के विभिन्न विधाओं के अध्ययन सामग्री प्राप्त होते हैं। समाज में जीवन यापन करते समय लेन-देन अनिवार्य है। किसी लेन-देन या विभिन्न संप्रदायों के बीच में होने वाले व्यवहार को देखेंगे तो उसका मूल स्वरूप हमारे सामने प्रस्तुत होता है। जिज्ञासा आगे उसके मूल को देखने की चेष्टा करता है। उस समाज पर हुए अन्य मतों के

Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences

Volume 2, 2022, pp. 82–89

प्रभाव को परखने की कोशिश करता है। विभिन्न संप्रदायों में होने वाले रूपांतर को पहचानने की कोशिश करते हैं। उपरोक्त कारणों से हमें यह पता चल जाता है कि परिपूर्ण लोक साहित्य को पहचानने के लिए हमें समाज में निहित मतीय या धार्मिक लोक साहित्य का अवलोकन करना चाहिए। उनकी सहज प्रस्तुति इसी संप्रदाय और मतों के साथ ही होती है। अनपढ़ देहाती ग्रामीण समाज में रट लगाने की परंपरा है। इस प्रकार रटा हुआ साहित्य शिक्षित समाज से भी श्रेष्ठ होती है।

हमारे समाज में प्रचलित साधु धर्म संप्रदाय अनादि काल से समयानुसार बदलाव के साथ आज भी प्रस्तुत है। जिसमें प्रस्तुत स्थिति, मान्यताएं, आचार और रीति-रिवाजों के लिए किन विचारों का प्रभाव हुआ इसको जानना आवश्यक है। हमारे यहां लिखित पुराण, आगम, साहित्य, इतिहास आदि तथ्य हमारे सहायता के लिए आ सकते हैं। इससे भी अधिक हमें जो लिखा नहीं है जो शास्त्र पद नहीं है यानी अलिखित मौखिक रूप में परंपरा से आए हुए अनेक आचरण के नीति, नियम, मंत्र, गीत, कहावत लोकोक्तियां सहायक होते हैं। समग्र रूप में इसी विषय को हम मत धर्मों से प्रभावित संस्कृति कह सकते है। इसी राह पर हमें उपलब्ध मत धर्मों के साहित्य का भी अध्ययन करना आवश्यक है। इस प्रकार के अध्ययन से हमें विभिन्न धर्मों के लोक साहित्य और धार्मिक साहित्य का संबंध साथ ही उस धर्म से संबंधित शास्त्र पुराणों में या धार्मिक नीति नियमों में या वास्तविक आचरणों में, साम्य और वैशम्य को देख सकते हैं। इस प्रकार की अध्ययन की दृष्टि से हम उस धर्मावलंबियों की संस्कृति, उनमें निहति लोक साहित्य की विशिष्टता, उनके ऊपर हुए अन्य धर्म के प्रभाव, उनके और अन्य लोक साहित्य के बीच में संबंध और विरोध, धार्मिक साहित्य और लोक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, उनके लोक साहित्य में निहित भाषीय विशिष्टता, रस-छंद-अलंकार, कला पक्ष और भाव पक्ष दृष्टि से अध्ययन कर सकते हैं। साथ ही उनके धार्मिक सिद्धांत किस प्रकार उनके लोक साहित्य में प्रतिबिंबित हुए हैं, काव्य समुद्र की दृष्टि से जनपद या लोक साहित्य की विशिष्टता आदि इस प्रकार के विचारों को हम अध्ययन कर सकते हैं।

Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences

Volume 2, 2022, pp. 82–89

कन्नड़ लोक साहित्य के तत्व और विधानों को हम विभिन्न रूपों में देख सकते हैं। संस्कृति के अंतर्गत समस्त व्यवहार मौखिक, वाचक अथवा कंठस्थ रूप में देखा जाता है। इस प्रकार का कन्नड़ लोक साहित्य अपने संप्रदाय के ज्ञान को निरंतर आगे बढ़ाते हुए आ रहा है। कन्नड़ लोक साहित्य में पुराण, ऐतिह्य, गीत, कथा, कहावत, लोकोक्तियां, लावणी गीत, भाषा के विविध रूप, मान्यताएं, आचरण, कला और वैद्य पद्धति, खेती बारी, रसोई का काम, शिकार करने की कला, खेल-कूद, मंत्र, वामाचार यह सारे विषय अनुकरण के कारण, ज्ञापक शक्ति के कारण परंपरा एवं संप्रदाय से हमें उपलब्ध हुए हैं। कालांतर में अक्षर ज्ञान के कारण मौखिक परंपरा के साथ इन कलाओं का ग्रन्थस्तीकरण होने लगा। तब तक रट लगाने की परंपरा यानी कंठस्थ करके ही सभी लोक साहित्य के विविध विधाओं को आगे बढ़ाते थे। अनेक विधाओं का ग्रंथ के रूप में आने के बाद भी परंपरा से आए हुए मौखिक संप्रदायों में खलन नहीं पड़ी। बल्कि अपनी-अपनी संप्रदायों में, मतों में, त्योहारों में, जात्रा-महोत्सव के संदर्भों में यह मौखिक परंपरा अविच्छिन्न बनी आ रही है।

इस प्रकार सामान्य मनुष्य के जीभ में प्रतिष्ठापित सबको हित देने वाली सबको समझ में आने वाली सर्वतोमुख अभिव्यक्ति माध्यम बनकर मनुष्य के जन्म के साथ प्रारंभ होकर उसकी संपूर्ण जीवन में निरंतर संबंध को स्थापित करते हुए अनेक सदियों से विरासत में आई हुई परंपरागत ज्ञान को ही जनपद या लोक साहित्य कहा जाता है। मौखिक संप्रदाय से आगत इस बोली या ग्रन्थस्त ज्ञान-विज्ञान को मनुष्य एकबारगी में प्राप्त नहीं कर सकता। संस्कृति पल्लवन के विभिन्न अवस्थाओं में, विभिन्न वातावरण में, अपने संपूर्ण ज्ञान, सृजनशीलता, क्रियाशीलता को ध्यान में डालकर मूर्तिवत बनाया गया ज्ञान ही लोक साहित्य है।[3] हजारों वर्षों से कालानुसार संग्रहित यह ज्ञान आज के उदारीकरण या जागतिकरण के दहलीज पर कितना आवश्यक है? इस प्रश्न का विश्लेषण करना आज की अनिवार्यता है।

लोक साहित्य के प्रथम विद्वान फ्रांसिस ग्रास कहते हैं कि- "एक देश की लोक साहित्य को न जाने वाला राजा भी नहीं बन सकता या राजनेता भी नहीं बन सकता"। वैज्ञानिक प्रगति, यंत्र युग और वैचारिक क्रांति के कारण पाश्चात्य

आकर्षण हमारे जीवन क्रम में आकर बसने लगा है। युगों से मौखिक परंपराओं से आए मान्यताएं, विचार, साहित्य और सांस्कृतिक मूल्य कहीं दूर चले जाएंगे, यह डर सबके हृदय में बसने लगा हैं। तब हर समाज के हर तबके पर अपनी-अपनी संस्कृति और परंपराओं की रक्षा करना अनिवार्य है। जब विद्वान यह विचार करने लगे तब विश्व के अनेक भागों में लोक साहित्य का अध्ययन होने लगा। इसी अध्ययन को हम 'जानपद विज्ञान' या 'लोक विज्ञान' कह सकते हैं। जीवन के सभी पहलुओं का समागम ही लोक साहित्य है। जीवन में अनुभव में आने वाले सुख-दु:ख, हार-जीत, उन्नति और अपजय, आदी के कारण निकले गीत, नृत्य और अभिव्यक्ति के सभी माध्यम यहां तक की भाषा भी लोक साहित्य बन जाता है। इसके फलस्वरूप मनुष्य अपनी संस्कृति को परिपूर्ण रूप से समझने के लिए लोक साहित्य का अध्ययन अनिवार्य है। लोक साहित्य का अध्ययन कल्पना नहीं है। लोक कलाओं में शास्त्रीयता है। लोक साहित्य एक अत्यंत आकर्षणीय अध्ययन का विषय है। समाज के मानवीय मूल्यों को पहचानने के लिए लोक साहित्य का अध्ययन एक समर्थ माध्यम है।

आगे हम कन्नड़ साहित्य परंपरा में लोक साहित्य के अंश को पहचानने की कोशिश करेंगे। इस अध्ययन के लिए हम प्राचीन कन्नड़ साहित्य में मिलने वाले जनपदीय रचनाओं को देख सकते हैं। लोक साहित्य की दृष्टि से कन्नड़ भाषा का 'वड्डाराधन' ग्रंथ कन्नड जानपद साहित्य का खज़ाना माना जाता है। 'वड्डाराधन' धर्म ग्रंथ की धार्मिक आंशों को प्रत्येक करके देखा जाए तो, वह परिपूर्ण जानपद कथाओं का संग्रह है। 'वड्डाराधन' ग्रंथ की कथा शैली जानपद कथाओं से मेल खाती है। जनपद कथाओं में आने वाले विविध प्रकारों को हम 'वड्डाराधन' कथाओं में देख सकते हैं। इन कथाओं में किन्नर, रम्म, अद्भुत, विनोद, अतिमानुष प्राणी पक्षियों की कथाएं सम्मिलित हैं। जैन धर्म से संबंधित 'वड्डाराधन' की कथाओं में नायक अति मानुष विरोधियों के बाधाओं को पार कर कर्म विजयी हो कर केवल ज्ञान को प्राप्त करता है। इस कृति में कुल 19 कथाएं हैं। लोक साहित्य के आधार पर कथा कहने की शैली एवं रोचकता इस ग्रन्थ के लेखक 'भ्राजिष्णु' को प्राप्त हुआ है। कन्नड़ जनपद कथाओं में गुरु-शिष्य तंत्र, संवाद-शैली और कौतूहल से भरपूर दृष्टांत प्राप्त होते हैं। इन कथाओं में मायाजाल, देशांतर, परीक्षाएं, विरोध, संयम, तप, साधना, साहस आदि विचारों को सहज ही सम्मिलित दिखाया गया है। 'वड्डाराधन' कथाओं में

रीति-रिवाज, पहनावा, मान्यताएं, लोक वाद्य, जनपद वैद्यपद्धति, कामकाज, कर कुशलता, मनोरंजन के विषय आदि विषयों का वर्णन है। साथ ही समाज में निहित पर्व-त्यौहार, जात्रा-महोत्सव, उत्सव, व्रतादि परंपराएं इन कथाओं में दर्शित होते हैं। कुछ कथाओं में खेल, नाग देवताओं की पूजा, विभिन्न मान्यताएं, गर्भवती स्त्रियों की इच्छाएं, कहावत और लोकोक्ति जैसे विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

इसी कड़ी में 'रत्नाकर वर्णी' कवि के सांगत्य साहित्य के कृति 'भरतेश वैभव' में भी अनेक जनपदीय यानी लोक साहित्य के अंशों को देख सकते हैं। 'भरतेश वैभव' में भरत का अपने परिवार के साथ संवाद, हास्य, आचार-विचार से संबंधित व्यवहार, शकुन शास्त्र, विधि निषेधों के बारे में विस्तृत सामग्री प्राप्त है। आगे 'नंजुंड' कवि 'कुमार राम' के सांगत्य में गीत, कथा, लावणी पद प्राप्त होते हैं। 'चावुंडराय' के 'चावुंडरायपुराण' ग्रंथ में विशिष्ट कथा निरूपण शैली दिखाई देती है। इस ग्रंथ में लोक साहित्य के अनेक विचार जैसे शकुन शास्त्र, सपने, मान्यताएं, आशय और कहावतों का मिश्रण मिलता है।

मध्यकालीन कन्नड़ जनपद साहित्य में विद्वानों और संस्कृत भाषा से संबन्धित चम्पू साहित्य के साथ एक विशिष्ट प्रकार का वचन, रगळे, षट्पदी, सांगत्य आदि साहित्य आकर भरपूर मात्रा में उपलब्ध होते हैं। इनमें कन्नड़ साहित्य का वचन रूप यह विशेष प्रकार का है। इसमें शिव शरण वचन कार जनपद संस्कृति से ही निकले हुए श्रेष्ठ साहित्यकार हैं। यह सभी समाज के निम्न वर्ग से संबंधित कवि है। कुम्हार, शिकारी, अहेरी, नेकार, काष्ठ कला, डोहर, दर्जी आदि समाज के विभिन्न परंपराओं से आकर वचन साहित्य में अपना सृजन कार्य किए थे।[4] इस काल के साहित्यकारों में प्रमुख थे अल्लमप्रभु, अक्कमहादेवी, बसवन्ना आदि। इन सभी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में पूजा विधि-विधान, प्रकृति पूजा, भूताराधन, जात्रा-महोत्सव, धार्मिक आचरण, जनपद कलाओं का सशक्त प्रस्तुति की है। कन्नड़ साहित्य में वचनकारों के बाद कीर्तन साहित्य का सृजन हुआ। जिसमें भगवद् भक्ति ही मूल तत्व था। दास साहित्य में कनक दास अपने कीर्तन गीतों में रामध्यान चरित, कीर्तन गीत और दशावतार की रचनाओं में जनपदीय लोक साहित्य के अंश दर्शित होते हैं। 'कनकदास' द्वारा रचित 'मोहन तरंगिणी' कृति में जनपद शैली

में श्रीकृष्ण कथा का वर्णन है। राघवांक अपने हरिश्चन्द्र काव्य में शिकार का वर्णन करते हैं। कन्नड़ के सुप्रसिद्ध कवि सर्वज्ञ के वचनों में भी समाज के लोपदोषों को दिखाया गया है। सर्वज्ञ के वचनों में कहावत-मान्यताएं, वैद्य, कृषी, रसोई, आचार विचार, देवताराधन, भूताराधन आदि विषयों का विश्लेषण है। 'रूपक साम्राज्य चक्रवर्ति' नाम से प्रख्यात 'कुमारव्यास' कवि महाभारत की कथावस्तु को जनपदीय शैली में प्रस्तुत करते हैं।

आधुनिक कन्नड़ नवोदय, प्रगतिशील, नव्य और दलित-बंडाय साहित्य में भी अनेक कन्नड़ के साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में जनपदीय अंशों का भरपूर उपयोग किया है। नवोदय साहित्य में ग्रामीण जन को आकर्षित किए रागरती, कुणियोनु बारा, हुब्बल्लीयांव जैसे कविताएँ सबको आकर्षित करते हैं। प्रगतिशील साहित्य में काव्य से ज्यादा गद्य पर लेखक ध्यान दिए। फिर भी बसवराज कट्टीमनी, अ.न. कृष्णराय, त. रा. सुब्बराव, चदुरंग आदि प्रगतिशील साहित्यकार अपनी रचनाओं में लोक साहित्य या जनपदीय विचारों को दर्शाए हैं। नव्य कन्नड़ साहित्य में गोपालकृष्ण अडिग जानपद साहित्य के भाषा एवं तंत्र को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किए हैं। इनकी कविता 'भूमिगीत' और संग्रह 'चंडमद्दले' लोक साहित्य के लक्षण दर्शित होते हैं। रामचन्द्र शर्मा के 'एळु सुत्तिन कोटे' कविता जानपद कथा से प्रारम्भ होता है। आगे कन्नड़ दलित बंडाय साहित्य में सिद्धलिंगय्य, देवनूर महादेव, चेन्नण्ण वालीकार, काळेगौड आदि रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में भरपूर लोक साहित्य के अंशों का उपयोग किया है। चन्द्रशेखर पाटील के 'गुंडम्मन हाडु', बरगूर रामचन्द्रप्प के 'गुलामगीते', बसवराज सबरद के 'दनिएत्ति हाडेन', अरविंद मालगत्ती के 'मूकनिगे बाइ बंदाग' कविताओं में ग्रामीण जनपदीय विचार दिखाई देते हैं। उपरोक्त विचार कन्नड़ भाषा साहित्य में निहित लोकसाहित्य से संबन्धित एक छोटा सा विश्लेषण है। जिस प्रकार धर्म संस्कृति जुड़ा है उसी प्रकार साहित्य लोक साहित्य यानी जनपद से जुड़ा है। अपनी सही पहचान के लिए इस जनपद साहित्य के अध्ययन अत्यावश्यक है।

आधार ग्रन्थ सूची

1. जन-जनपद-जानपद, डॉ. एम्. चिदानंदमूर्ति, पृ. सं. 304

Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences

Volume 2, 2022, pp. 82–89

2. कलबुर्गी जिल्लेय जनपद कथेगळ आशय मत्तु मादरिगळु, डॉ. वीरण्ण दंडे, पृ. सं. 14
3. कन्नड़ जनपद साहित्य, डॉ. एस्.एस्. अंगडी, पृ. सं. 37
4. जैन जनपद साहित्य, डॉ. एस्. पी. पद्मप्रसाद, पृ. सं. 8

डॉ. श्रीधर पी डी
विभागाध्यक्ष – हिन्दी अध्ययन विभाग
क्रिस्तु जयन्ती कालेज, के. नारायणपुर, कोत्तनूर पोस्ट
बेंगलूरु-560077